

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02,लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत ओम भारती बनाम सरकार

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट कोर्ट नं०-02,लखनऊ।

उपस्थित : श्री राम बिलास प्रसाद, एच०जे०एस०

J.O.code UP6499

सी०एन०आर०नं०-UPLK010050442022

जमानत प्रार्थनापत्र संख्या:-2901/2022

महंत ओम भारती उम्र 55 वर्ष, चेला महंत जयराम भारती, निवासी-377, ब्रम्हचारी कुटी
गेझा तिलपताबाद सेक्टर-82, नोएडा गौतमबुद्धनगर, (उ०प्र०)201304

.....प्रार्थी/अभियुक्त

बनाम

उत्तर प्रदेश सरकार

.....अभियोगी

अ०सं०-0074/2022

धारा-354,377,511 भा०दं०सं०

व 7/8 पाक्सो एक्ट

थाना-चौक,

जनपद लखनऊ।

दिनांक:-04-05-022

अभियुक्त महन्त ओम भारती की तरफ से यह प्रथम जमानत प्रार्थनापत्र अपराध सं०-0074/2022, धारा-354, 377, 511 भा०दं०सं० व 7/8 पाक्सो एक्ट, थाना-चौक, जिला लखनऊ के तहत प्रस्तुत किया गया है। प्रार्थनापत्र शपथपत्र से समर्थित है।

संक्षेप में अभियोजन कथानक इस प्रकार है कि वादी मुकदमा ने दिनांक 11.04.2022 को समय 22.01 थाना हाजा पर इस आशय की प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी कि वादी फोटोग्राफी का व्यवसाय कर अपनी बहन मुस्कान व वि धवा माँ का पेट पालता है। वादी चौक स्थिति बड़ी कालीजी मन्दिर में दर्शन करने तथा उक्त मन्दिर में मुण्डन अन्नप्राशन आदि कार्यक्रमों में फोटोग्राफी करने जाता है तथा मन्दिर प्रांगण में ही वादी की प्रसाद की दुकान भी है। मन्दिर के वर्तमान महन्त ओम भारती अक्सर वादी को अपने कमरे में अपने हाथ पैर दबवाने के लिए बुलाते थे, अक्सर वादी को अपने कमरे में अपने हाथ पैर दबवाने के लिए बुलाते थे, मना करने पर उक्त महन्त वादी से दुकान खाली करने की धमकी देता था। वादी मन्दिर के महन्त होने के नाते उनके भय के कारण चला जाता था। महन्त बंद कमरे में वादी के शरीर को गलत ढंग से छूने का प्रयास करता था, जिससे वादी आशंकित रहता था। इसी क्रम में वादी को महन्त ओम भारती ने दिनांक 08.04.2022 को रात लगभग 1045 बजे मन्दिर में आरती समापन के बाद जबरदस्ती अपने कमरे में रोक लिया तब वादी ने अपनी मोबाईल की आडियो रिकार्डिंग छिपकर चालू कर दी। उक्त महन्त वादी को अपना शिष्य बताते हुए मेरे कपड़े उतार कर मेरे जननांगों को छूते हुए मेरे साथ अप्राकृति मैथुन करने का प्रयास करने लगा। विरोध करने पर महन्त ओम भारती ने वादी को छोड़ दिया और कहा कल से तुम्हें रोज आना होगा और वादी को लालच

(2)

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02, लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत आम भारती बनाम सरकार

अपराधिक प्रवृत्ति के हैं। इससे पहले भी महत्त ओम भारतीय ऐसे कृत्यकर चुका है। वादी की माँ और बहन ने शर्मिन्दगी के कारण उक्त बात किसी को नहीं बताई थी। परन्तु अब वादी उक्त दोनों घटनाओं की प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखवाकर कानूनी कार्यवाही करना चाहता है। अतः वादी की प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखकर वादी व उसके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने की याचना की गई।

प्रार्थी/अभियुक्त द्वारा जमानत प्रार्थनापत्र में यह कथन किया गया है कि शपथी प्रार्थी/अभियुक्त(जेल में निरुद्ध) का चेला और मंदिर में पुजारी एवं वाद उपरोक्त में प्रार्थी/अभियुक्त का पैराकार है। शपथी माननीय न्यायालय के समक्ष प्रथम जमानत प्रार्थना पत्र मु०अ०सं० 0074/2022, दिनांकित 11.04.2022 अ० धारा 354, 377, 511 आई.पी.सी. सपठित धारा-7/8 पाक्सो अधिनियम, 1012, थाना चौक, जनपद लखनऊ के विरुद्ध योजित कर रहा है। वादी द्वारा दिनांक 11.04.2022 को प्रार्थी/अभियुक्त को झूठे मुकदमें में फंसाने की नियत से मु०अ०सं० 0074/2022, दिनांकित 11.04.2022 अ० धारा 354, 377, 511 आई.पी.सी. सपठित धारा-7/8 पाक्सो अधिनियम थाना चौक दर्ज कराया है। वादी के द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्व में प्रार्थी/अभियुक्त द्वारा वादी को अपने कमरे में हाथ पैर दबवाने के लिए बुलाते थे और दुकान खाली करने की धमकी देते थे तथा बंद कमरे में वादी के शरीर को गलत ढंग से छूने का प्रयास करता था जिससे वादी आशंकित रहता था परन्तु वादी ने न कोई निश्चित समय और न ही किसी निश्चित तिथि का उल्लेख प्रथम सूचना रिपोर्ट में किया है जिससे साबित होता है कि प्रार्थी/अभियुक्त पर लगाए गए आरोप पूरी तरह असत्य व निराधार है। वादी द्वारा प्रार्थी/अभियुक्त पर दिनांक 08.04.2022 को रात लगभग 10.45 बजे मंदिर में आरती समापन के बाद जबरदस्ती अपने कमरे में रोक लेना व वादी को अपना शिष्य बताते हुए कपड़े उतारकर छूते हुए अप्राकृतिक मैथुन करने का प्रयास करने का आरोप लगाया है जबकि दिनांक 08.04.2022 को नवरात्रि का दिन होने के नाते मंदिर परिसर में सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालू उपस्थित थे। परन्तु उपरोक्त अपराध को न किसी ने देखा न सुना जिससे स्पष्ट होता है कि प्रार्थी/अभियुक्त पर लगाए गए आरोप पूरी तरह असत्य व निराधार है। वादी प्रार्थी/अभियुक्तने अपने प्रथम सूचना रिपोर्ट में घटना के संबंध में अपनी माँ को गताने की बात कही जिसपर वादी की माँ ने उल्टे अपनी पुत्री मुस्कान के सथ भी प्रार्थी/अभियुक्त के ऊपर अकेले कमरे में जबरदस्ती बुलाकर बुरी नियत से उसके शरीर से दिनांक 04.04.2022 को समय 03.00 बजे से 04.00 बजे के बीच छेड़छाड़ करने की बात कही, इस तरह दो घटनाओं का उल्लेख प्रथम सूचना रिपोर्ट उपरोक्त में एकसाथ किया गया है जबकि किसी में भी गटना की निश्चित तिथि व समय का उल्लेख नहीं किया गया है। इस तरह प्रथम सूचना रिपोर्ट दिनांक 11.04.2022 में दो घटनाओं का उल्लेख, जो अलग अलग समय पर घटित हुई थी, एक ही मुद्दे में उल्लेख करने से अपराध की प्रकृति एवं सत्यता स्वयं में संदग्धि प्रतीत होती है जिससे स्पष्ट होता है कि प्रार्थी/अभियुक्त पर लगाए गए आरोप पूरी तरह असत्य व निराधार है। वादी द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट में मिथ्या आरोप लगाते हुए कहा गया है कि प्रार्थी/अभियुक्त द्वारा उसकी माँ को जबरदस्ती साड़ी, चांदी की बिछिया और पायल काली माँ का प्रसाद बताकर दिया था जिससे वह अपनी जुबान न खोले जबकि प्रार्थी/अभियुक्त द्वारा इस तरह से कोई सामान वादी की माँको नहीं दिया गया था। ऐसा आरोप सिर्फ वादी इसलिए लगा रहा है जिससे उसके असत्य आरोप को बल मिल सके जबकि इस कथन पर विश्वास करना उस स्थिति में और भी मुश्किल है जब मंदिर परिसर में भारी तादात में पुलिस बल की मौजूदगी हो और ऐसा दुष्कृत्य किसी की बेटी के साथ कारित किया गया हो,

(3)

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02,लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत आम भारती बनाम सरकार

लगातार घटित होते हुए भी वादी एवं वादी का परिवार मंदिर प्रांगण में दुकान लगाकर निरंतर अपना व्यवसाय किया जाता रहा जबकि वास्तविक तथ्य यह है कि श्रद्धालुओं की भारी भीड़ और मंदिर की व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रार्थी/अभियुक्त ने वादी की दुकान को मंदिर परिसर से हटवा दिया था जिसके कारण वादी लोगों के बहकावे में आकर एवं पुलिस से साठ गॉठ कर प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराकर जेल भेजवा दिया। श्री बड़ी काली जी मंदिर ट्रस्ट सार्वजनिक धार्मिक और धर्मार्थ ट्रस्ट है जिसकी स्कीम दिनांक 22.12.1916 और दिनांक 14.12.1938 को न्यायिक आयुक्त अवध द्वारा पारित की गई जिसके नियत-04 की व्यवस्था के अंतर्गत महंत बोधगया द्वारा मंदिर में पूजा पाठ इत्यादि के लिए नियुक्त किया गया था जिसके अनुसार वह श्रद्धालुओं की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए नियमानुसार मंदिर की पूजा पाठ की व्यवस्था को संचालित करता था। स्कीम उपरोक्त काक संबंधित रूल-04 निम्नरूप में है—

"4. the Trust shall be administered by a committee consisting of the Mahant of Bodh Gaya for the time being as its president and four Hindu resident of Lucknow as members. It will be open to the Mahant to nominate and depute any Sanyasi preferably Sanskrit knowing to represent him on the committee and to act on his behalf."

मठ श्री बड़ी काली जी मंदिर ट्रस्ट एक प्राचीन मंदिर है जिसकी महत्ता सिर्फ लखनऊ के बाहर के दूरदराज के जनपदों है जिसके कारण दूर दूर के जनपदों और क्षेत्रों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने मंदिर आते हैं जिसमें महिला, पुरुष, वृद्ध विकलांग और अबोध बच्चे लाखों की संख्या में शामिल होते हैं।

मंदिर परिसर बहुत छोटा है जिसके कारण लाखों की भीड़ को बगैर सुनियोजित व्यवस्था के संभाल पाना कल्पना के परे है जिसको दृष्टि रखते हुए प्रार्थी/अभियुक्त ने किसी तरह नवरात्रि के कुछ दिन पहले ही मंदिर के पीछे वाले भाग गो लेंटल डलवाकर उसकी छत को दक्षिण दिशा की तरफ बढ़ाकर श्रद्धाओं की सुविधा के लिए बनवाया क्योंकि उस जगह पर माताएं बहने धार्मिक मान्यता के अनुसार अपने बच्चों का मुंडन सस्कार कराती हैं और जगह कम होने के कारण बहन बेटियों को काफी असुविधा होती थी क्योंकि गर्भ गृह के ठीक पीछे ही श्रद्धालु दीपक जलाते व नीर लेते हैं और मंदिर की परिक्रमा करते हैं जिसके कारण वहां पर लोगों की भड़क उठती है जिसका फायदा उठाकर जेबकतरे और चोर भक्तों के पर्स और चैन इत्यादि चोरी कर लेते हैं इसलिए वहां पर भारी संख्या में पुलिस बल और मंदिर के अतिरिक्त स्वयंसेवक भी सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण से मौजूद रहते हैं।

मंदिर में इस बार नवरात्रि का पूर्व 02.04.2022 से 10.04.2022 तक था चूंकि वैश्विक कोरोना महामारी के बाद पहली बार मंदिर पूरी तरह से भक्तों के दर्शन के लिए खुला था इसलिए प्रार्थी/अभियुक्त ने मंदिर के स्वयंसेवकों के साथ मिलकर संभावित भीड़ को नियंत्रित करने पर विचार विमर्श किया जिसमें यह निर्णय लिया गया कि इस बार भीड़ पहले की अपेक्षा अधिक होगी और मंदिर में अंदर आने और बाहर जाने का एक ही रास्ता है जिसके कारण दर्शनार्थियों को आन जाने में काफी समस्या होती है और उसको नियंत्रित कर पाना मंदिर और पुलिस प्रशासन के लिए काफी चुनौतीपूर्ण होता है इसलिए उसकी व्यवस्था किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

उसके बाद प्रार्थी/अभियुक्त ने किसी तरह पैसे की व्यवस्था करके मंदिर की दक्षिण दिशा में दर्शनार्थियों के बाहर निकलने के लिए एक सीढ़ी बनवाई जो उसी जगह के पास थी जहाँ

(4)

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02,लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत आम भारती बनाम सरकार

उसके बाद यह प्रकरण प्रार्थी/अभियुक्त के सामाने आया तब प्रार्थी/अभियुक्त ने वादी, वादी की माँ को मंदिर में श्रद्धाओं के प्रवेश करने वाले रास्ते के किनारे की सड़क/गली में एक अस्थायी दुकान देते हुए कहा कि यहाँ दुकान मत लगाओं नवरात्रि तक तुम लो अपनी दुकान वहीं नीचे लगाओ जहाँसभी दुकानदार लगाते हैं, तुम लोगों की आजीविका भीचलेगी और मंदिर में अव्यवस्था भी उत्पन्न नहीं होगी, जिस पर वादी और वादी की माँने प्रार्थी/अभियुक्त को देख लेने की धमकी देते हुए कहा कि संगीन धाराओं में फर्जी मुकदमा दर्ज कराकर जेल भेजवा देंगे कोई मेरा कुछ नहीं कर पाएगा उसके बाद वादी, वादी की माँ और वादी की बहन ने मंदिर की व्यवस्था से पूर्व में हटाए गए लोगों के साथ मिलकर प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध षडयंत्र रचा जिसमें जिसमें उनके साथ पुलिस प्रशासन भी शामिल है। जो पूरी तरह से फर्जी है। जिसकी पुष्टि जीडीसं० 29 दिनांकित 12.04.2022 समय 13.38 बजे, समाचार पत्र दिनांक 12.4.2022 एवं मंदिर के सीसीटीवी फुटेज दिनांक 11.04.2022 समय रात्रि करीब पौने ग्यारह बजे से होती है।

प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध सुनियोजित षडयंत्र को प्रथम सूचना रिपोर्ट, समाचार पत्रों की कटिंग, सीसीटीवी फुटेज दिनांक 11.04.2022 और जीडी संख्या-29दिनांकित 12.04.2022 से स्पष्ट होता है कि प्रार्थी/अभियुक्त की गिरफ्तारी का समय, स्थान और तिथि में काफी विरोधाभास है जिससे यह स्पष्ट होता है कि पुलिस प्रशासन ने वादीगण और मंदिर से निष्कासित लोगों के साथ मिलकर आपराधिक षडयंत्र रचकर प्रार्थी/अभियुक्त को फर्जी व झूठे मुकदमें में फंसाया है।

वास्तविक तथ्य यह है कि प्रार्थी/अभियुक्त को सूत्रों के माध्यम से जब यह ज्ञात हुआ कि वादी की बहन प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध चारित्रिक आरोप संबंधित बातें लोगों से जा रही है तब प्रार्थी/अभियुक्त ने वादी शिवम शर्मा के मोबाईल नं० 9005522116 पर फोन किया और चारित्रिक आरोप के संबंध में बात की, तब वादी के द्वारा प्रार्थी/अभियुक्तके विरुद्ध लगाए गए आरोपों से साफ इंकार करते हुए कहा गया कि यह आरोप असत्य व निराधार है वादी की बहन किसी के बहकावे में ऐसी बातें कह रही होगी उसको अबोध बालिका समझाकर माफ कर दीजिए जिसकी काल डिटेल्स प्रार्थी/अभियुक्त के पास सुरक्षित है।

दिनांक 03.04.2022 को घटित घटना के समर्थन में मौके पर उपस्थित चश्मदीद गवाहों ने घटना की सत्यता के संबंध में आरोप के जांच कर रहे सक्षम अधिकारी/विवेचना अधिकारी थाना चौक को शपथपत्र दिनांक 14.04.2022/15.04.2022 को रजिस्टर्डडाक के माध्यमसे प्रेषित कर दिया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि दिनांक 03.04.2022 की घटना से क्षुब्ध होकर वादी ने मनगढ़न्त व फर्जी आरोप लगाया है।

वादी द्वारा अपनी प्रथम सूचना रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रार्थी/अभियुक्त ने मेरे जननांगो को छूते हुए मेरे साथ अप्राकृतिक मैथुन करने का प्रयास किया जबकि धारा-377 आई. पी.सी. में वर्णित अपराध के लिए आवश्यक इन्द्रिय भोग गठित करने के लिए पवेशन आवश्यक है। इसलिए प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध धारा 377 आई०पी०सी० का अपराध नहीं बनता है परन्तु विवेचनाधिकारी बिना किसी तथ्य पर विचार किए प्रार्थी/अभियुक्त के विरुद्ध धारा 377 में मुकदमा पंजीकृत करके जेल भेजा जाना न्याय विरुद्ध है।

वादी द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट में धारा 354, 377 आई.पी.सी.व धारा 7/8 पाक्सो के साथ धारा 511 केक अंतर्गत मुकदमा पंजीकृत हुआ जिससे कि वादी द्वारा लगाए आरोप में मात्र प्रयास करना कहा गया है न कि अपराध कारित करना कहा गया है लेकिन पुलिस द्वारा प्रार्थी/अभियुक्त को जेल भेज दिया गया जो कि न्याय विरुद्ध है। उपरोक्त तथ्यों एवं साक्ष्यों के आधार पर प्रार्थी/अभियुक्त पर वादी द्वारा लगाए गए सभी आरोप बेबुनियाद, मनगढ़न्त षडयंत्र पूर्ण एवं

(5)

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02,लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत आम भारती बनाम सरकार

सूचना रिपोर्ट के आधार पर बनता ही नहीं लेकिन आरोपो को गंभीर किस्म का बनाने के लिए उन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर दिया गया। प्रथम दृष्टया प्रार्थी/अभियुक्त पर कोई आरोप नहीं बनता। जमानत मिलने का आशय यह नहीं कि प्रार्थी/अभियुक्त आरोप मुक्त हो गया बल्कि उसके आरोप पर विचारण माननीय न्यायालय के समक्ष होगा और न्यायचालय उसे सजा भी सुना सकता है। प्रार्थी/अभियुक्त जमानत का दुरुपयोग नहीं करेगा गवाहों को प्रभावित नहीं करेगा, जांच में सहयोग करेगा और शहर के बाहर कहीं नहीं जाएगा, यदि कहीं जाएगा तो न्यायालय से पूर्वानुमति प्राप्त करके ही जाएगा। प्रार्थी/अभियुक्त को जमानत पर रिहा करना श्रीमान न्यायालय की विवेकाधीन शक्ति के अंतर्गत आता है। जमानत मिलनेसे प्रार्थी/अभियुक्त की सजा का प्रभाव कम नहीं होगा। प्रार्थी/अभियुक्त किसी भी सक्षम न्यायालय द्वारा दोषसिद्ध नहीं पाया गया है। प्रार्थी/अभियुक्त न्यायालय द्वारा निर्धारित जमानत बंधपत्र प्रस्तुत करने के लिए तैयार है और उसका दुरुपयोग नहीं करेगा।

वादी मुकदमा को नोटिस का तामीला पर्याप्त होने पर उसके द्वारा आपत्ति दाखिल करते हुए जमानत प्रार्थना पत्र का विरोध किया गया है। वादी द्वारा यह कथन किया गया है कि उसके द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट सही घटना पर आधारित है। झूठा मुकदमा लिखाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। पुलिस द्वारा जो भी कार्यवाही की गयी है वह सही तरीके से की गयी है और अभियुक्त द्वारा धिनौना अपराध कारित किया गया है। वादी द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट के कथन का समर्थन किया गया है।

विद्वान सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता, फौजदारी द्वारा जमानत का विरोध किया गया और कहा गया है कि अभियुक्त पर नाबालिग लड़के साथ अप्राकृतिक मैथुन करने का प्रयास किया गया और उसकी बहन के साथ अश्लील हरकते करने का आरोप है। अभियुक्त द्वारा कारित अपराध गम्भीर प्रकृति का है। अतः जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त किया जाय।

सुना एवं पत्रावली का अवलोकन किया गया।

पत्रावली के अवलोकन से स्पष्ट है कि अभियुक्त जनपद लखनऊ के थाना चौक के प्रसिद्ध काली जी मंदिर का महंत व पुजारी है। महंत पर लगाये गये आरोप के संदर्भ में धारा 164 सीआरपीसी के बयान, पीड़िता द्वारा दिये गये बयान का अवलोकन जरिये केस डायरी किया गया। अभियुक्त द्वारा पीड़ित/पीड़िता के साथ यौन संबंधी अपराध किये जाने का कथन है “कुछ परिस्थितियों में यौन दुर्व्यवहार को अधिक संगीन माना गया है जैसे किसी नजदीकी अथवा पड़ोसी या किसी आस्था के प्रतीक व्यक्ति द्वारा किये जाने पर इसे काफी संगीन माना जायेगा।

शोषण के संदर्भ में मानवाधिकार आयोग द्वारा यह कहा गया है कि “बालकों के स्वतंत्र वातावरण व गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधाएं दी जाएं और बालकों और अल्पवय व्यक्तियों के शोषण से तथा नैतिक और आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। **बालक राष्ट्र की सुप्रीम सम्पत्ति है।**”

“बच्चे मानवता के लिए सबसे बड़ी भेट है और बालकों का यौन शोषण एक गम्भीर अपराध है।” अतएव ऐसीदशा में जिस धर्मस्थल से किसी विशेष समुदाय की आस्था जुड़ी हो, धर्मस्थल का तथाकथित महंत द्वारा बाल एवं शोषण करे। जिसकी अन्य मामले से तुलना नहीं की जा सकती। इसके अलावा अभियुक्त के विरुद्ध थाने द्वारा प्राप्त रिपोर्ट के अवलोकन से कई आपराधिक इतिहास भी परिलक्षित है। निश्चित ही गम्भीर प्रकरण है।

अतः केस के तथ्य एवं परिस्थितियों को देखते हुए बिना गुणदोष पर कोई मत व्यक्त किये

(6)

न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/पॉक्सो एक्ट
कोर्ट नं०-02,लखनऊ।
जमानत प्रार्थना पत्र संख्या-2901/2022
महंत आम भारती बनाम सरकार

कोर्ट नं०-2,लखनऊ।

WWW.LIVELAW.IN